International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 868-869

मध्यकाल में अमीर वर्ग

ज्योति
शोधछात्रा, इतिहास विभाग, म. द. वि. रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
मध्यकाल में सल्तनत का शासन रहा हो या मुगलों का दोनों ही साम्राज्यों के उत्थान, पतन, सुचारू रूप से चलाने आदि में अमीरों का बहुत ही महत्वपूर्ण हाथ रहा है। अमीर वर्ग मंत्रीयों से भी उच्च पद प्राप्त थे। सल्तनत काल में सुल्तान के बाद दूसरा पद अमीरों का ही था। 'अमीर' नाम सैनिक और असैनिक दोनों प्रकार के अधिकारियों के लिए प्रयुक्त होता था। अमीरों में अफगान, तुर्क, मंगोल जाति के मुसलमान सम्मिलित थे। अमीरों का जीवन भी अत्यधिक विलासिता का जीवन था। ये साधारण जनता पर मनचलते अत्याचार करते थे। ये पहले की तुलना में धनवान ही होते जाते थे। मध्यकाल में अमीरों के व्यवहार, सम्राट तथा जनता पर उनके प्रभाव आदि को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : अमीर, मुगलकाल, सल्तनतकाल, तरक्की, वेतन, उपाधियां।

प्रस्तावना

सल्तनत काल में सुल्तान के बाद दूसरा पद अमीरों का ही था। 'अमीर' नाम सैनिक और असैनिक दोनों प्रकार के अधिकारियों के लिए प्रयुक्त होता था। अमीरों में अफगान, तुर्क, मंगोल जाति के मुसलमान सम्मिलित थे। अमीरों का जीवन भी अत्यधिक विलासिता का जीवन था। ये साधारण जनता पर मनचलते अत्याचार करते थे। ये पहले की तुलना में धनवान ही होते जाते थे। श्री पाण्डेय ने मुगलकाल के बारे में लिखा है, 'इस समय के धनी पहले से अधिक धनी थे और वे धन का उपयोग करने में पहले से अधिक स्वार्थी थे। निर्धन पहले से अधिक निर्धन हो गए और साधारणतः उनकी स्थिति अधिक असहाय हो गई। सम्राट शाहजहां और आंरेगजेब के समय में उन पर करों का भार बढ़ गया और उस समय तक स्थानीय कर्मचारी अत्याचार करने की विधियों में अधिक दक्षता प्राप्त कर गए इसलिए उनका संकट और भी अधिक बढ़ गया।[1] सल्तनत काल तथा मुग़ल काल के अमीर, सामन्त तथा अन्य पदाधिकारी शासकों की भांति आमोद–प्रमोद का जीवनयापन करते थे। वे राजनीति में अपना विशेष दखल रखते थे। वे सुल्तानों एवं मुगल शासकों के कार्य में सहायता करते थे। ये राजनीति के दाव–पेचों में बड़े दक्ष होते थे। शासक के शक्तिहीन होने पर अवसर मिलते ही ये शासन पर अधिकार कर प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे। शासक यह तथ्य जानते थे इसलिए इनसे बहुत सजग रहते थे ओर इन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं देते थे। इस संबंध में अशरफ ने ठीक ही लिखा है कि राज्य उनकी स्वतन्त्रता को बढ़ावा नहीं देता था। उनके पुत्रों को भी राज्य की ओर से विशेष रियायत नहीं मिलती थी। उनके जीवनकला में ही उनसे पद आदि छीना जा सकता था।[2]

अमीरों के पूर्ण सहयोग पर ही शासक का सुशासन निर्भर करता था। अमीरों का असहयोग शासक के लिए परेशानी पैदा कर देता था। अमीरों का बढ़ता हुआ प्रभाव सुल्तान के लिए चिन्ता का विषय होता था। इल्तुतमिश ने अमीर के पद पर रहकर ही अवसर पाकर शासक पद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली थी। उसने अमीरों की शक्ति को ध्यान में रखकर ही अपनी सत्ता की सुरक्षा की दृष्टि से चालीस अमीरों का एक दल स्थापित किया था। इस दल ने इल्तुतमिश के बाद पांच सुल्तानों को गद्दी पर बिठाया और गद्दी से हटाया।[3] ये सुल्तान क्रमशः रूकनुद्दीन, फीरोज, रजिया, मुईजुद्दीन, बहरामशाह, उलाउद्दीन मसूद और नासिरूद्दीन सहमूद शाह थे। ये सुल्तान अमीरों के कारण परेशान रहे। इनके राज्य में अशान्ति रही। अमीर प्रायः हत्या आदि के षड्यन्त्र द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति किया करते थे। इस प्रकार के तरीके द्वारा जलालुद्दीन गद्दी पर बैठा था। जो शासक शक्तिशाली और कठोर स्वभाव का होता था, वह अमीरों को पूर्णतया नियन्त्रण में रखकर राज्य में शान्ति व्यवस्था बनाए रख सकता था।[4] जलालुद्दीन और अलाउद्दीन दोनों ऐसे ही सुल्तान थे। अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद अमीरों का उत्पात फिर बढ़ गया था और इसी के परिणामस्वरूप तुगलक वंश की स्थापना हुई थी। इसके बाद फिर वही क्रम दुहराया गया था। सैयद वंश के शासकों की दुर्बलता के कारण प्रान्तीय गवर्नर बहलोल लोदी ने लोदी वंश की स्थापना की थी।[5] अमीरों ने इस नए वंश को हटाने के लिए अपने प्रयत्न जारी रखे थे। अमीर दौलत खां ने इब्राहीम लोदी को हटाने के लिए बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया था। इस प्रकार देश में बहुत बड़े मुगल वंश की स्थापना के पीछे एक अमीर का ही षड्यन्त्र था। मध्यकाल में अमीरों के हाथ में शासन की काफी शक्ति रहती थी। जिसे वे समय मिलते ही बढ़ाकर शासक पद तक पहुंच सकते थे। सुल्तानों और अमीरों में परस्पर सन्देह का–सा वातावरण बना रहता था। जहाँ सुल्तान अमीरों के बल पर शासन चलाता था वहीं अमीरों के कारण ही उसे अपने शासन के चले जाने का खतरा भी रहता था। शासक और अमीर पक्ष में से जो जितना योग्य और प्रभावशाली होता था, परिस्थितियां जिसकी जितनी ज्यादा अनुकूल होती थीं, वह पक्ष उतना ही सफल रहता था।[6]

मुग़लकाल में भी स्थिति लगभग यही थी। अमीरों का प्रभाव इस काल में भी था। उनका राजनीति के क्षेत्र में दखल था। जिनामुद्दीन, बैराम खाँ और महावत खाँ इत्यादि ने विद्रोह किया था। इतना अवश्य है कि सल्तनत काल के और मुगलकाल के अमीरों के आचरण में बड़ा भारी अन्तर था। मुगलकाल के अमीर सल्तनत काल के अमीरों की भांति विश्वासघाती, षड्यन्त्रकारी और

उत्पाती नहीं थे। उन्होंने शासन को मजबूत बनाने में बहुत अधिक सहयोग दिया था।[7] इसी का परिणाम था कि मुगलकाल सल्तनत काल की तुलना में अधिक समृद्ध, वैभव–विलासिता का युग रहा। मुगल काल के बहुत थोड़े से अमीर विश्वासघाती निकले। इतना अवश्य है कि मुगलकाल के अमीर पूर्वकाल के अमीरों की तुलना में अधिक विलासी हो गये थे और सम्भवतः इसी प्रवृत्ति के कारण वे शासन प्राप्त करने के लिए की जाने वाली मेहनत नहीं कर पाते थे। वे चाहते थे कि उनका जीवन सुखी रहे। उन्हें किसी मुसीबत का सामना न करना पड़े, इसलिए वे शासकों से अपने संबंध अच्छे बनाये रखते थे। मुगल काल में अमीरों का सम्मान अधिक था। जब कोई मंत्री अमीर का पद प्राप्त कर लेता था तो उसकी प्रतिष्ठा भी और अधिक बढ़ जाती थी। मंत्री पद रहने तक तो उसे सुल्तान की आज्ञा का पालन करना पड़ता था परन्तु अमीर के सामाजिक अधिकारों में सुल्तान हस्तक्षेप नहीं करता था। सुल्तान का हस्तक्षेप संकट के समय ही होता था। सुल्तान अमीर से अच्छे संबंध बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहता था। बहलोल लोदी तो अपनी आप को 'अमीरों का अमीर' ही मानता था।[8] उसने सिंहासन का भी उपयोग नहीं किया था। उसने अमीरों के साथ कड़ा व्यवहार नहीं किया और न ही कोई अपमानसूचक व्यवहार किया। वह अमीरों के बीच बैठा रहता था। मुगल काल तक आते–आते अमीरों का जीवन विलासिता की प्रवृत्ति के कारण खोखला हो गया। उनकी वीरता कम हो गई। इस संबंध में 'मसिल–उल–उमरा' ने लिखा है कि 'यदि किसी मुगल सरदार की वीरताओं का वर्णन तीन पृष्ठों में आता तो उसके पुत्र का केवल एक ही पृष्ठ के अन्तर्गत आता था और उसके पौत्र का कुछ ही पंक्तियों में समाप्त हो जाता था।'[9]

अमीरों की निम्न श्रेणियां थीं – क. खान, ख. मलिक, ग. अमीर, घ. सिपहसालार। अमीरों में सबसे ऊंची श्रेणी के अमीर को 'खान' की उपाधि दी जाती थी। इनमें भी जो और अच्छे माने जाते थे उन्हें 'अलूग–खाँ–ए–आज़म' की उपाधि दी जाती थी। 'खान' के बाद 'मलिक' और 'अमीर' की श्रेणियां थीं। दिल्ली के सुल्तानों के यहां मन्त्रियों की निम्न श्रेणी नहीं हुआ करती थीं। अमीरों के नीचे सैनिक अधिकारी 'सिपहसालार' और 'सर–खेल' इत्यादि होते थे। अमीर जिस विभाग में कार्य करता था उसी से उसकी सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति आंकी जाती थी।[10] शाही दरबार की तुलना में 'भू–विभाग' में कर एकत्र करने के लिए अधिक अमीर अधिकारी नियुक्त किये जाते थे। अच्छा कार्य करने आदि के आधार पर अमीरों को 'ख्वाजाजहाँ', 'इमाद–उल–मुल्क', 'सदर–ए–जहाँ' तथा 'अद्दाम–उल–मुल्क' आदि और उपाधियां दी जाती थीं। अमीरों के लिए 'मतरातिब' का पद सम्मान का पद माना जाता था। इस प्रकार अमीरों की अनेक श्रेणियां होती थीं और उनकी अनेक उपाधियां होती थी। राज्य की भूमि 'इक्तों' में विभाजित की जाती थी और देखभाल अमीरों द्वारा की जाती थी।[11]

शाही दरबार में ऐसे अमीरों की संख्या कम होती थी, जो ऊंचा वेतन प्राप्त करते थे और काम कुछ नहीं करते थे। अमीर को सुल्तान उसके पद के अनुरूप वस्त्र, तलवार, घोड़े और हाथी आदि प्रदान किया करते थे। खान दस और अमीर दो घोड़े रख सकता था।

निष्कर्ष

इस हम अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सल्तनत काल में सुल्तान के बाद दूसरा पद अमीरों का ही था। अमीरों में अफगान, तुर्क, मंगोल जाति के मुसलमान सम्मिलित थे। अमीरों का जीवन भी अत्यधिक विलासिता का जीवन था। इस समय के धनी पहले से अधिक धनी थे और वे धन का उपयोग करने में पहले से अधिक स्वार्थी थे। सल्तनत काल के और मुगलकाल के अमीरों के आचरण में बड़ा भारी अन्तर था। मुगलकाल के अमीर सल्तनत काल के अमीरों की भांति विश्वासघाती, षड्यन्त्रकारी और उत्पाती नहीं थे। उन्होंने शासन को मजबूत बनाने में बहुत अधिक सहयोग दिया था।

सन्दर्भ

1. अशरफ, के.एम., लाईफ एण्ड कंडीशनस दि पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, दिल्ली, 1959, पृ. 56
2. वही, पृ. 56
3. रिलिजन एण्ड पॉलटिक्स इन इण्डिया, दिल्ली, 2009, पृ. 63
4. श्रीवास्तव, ए.एल., दिल्ली सल्तनत, विपल अग्रवाल कम्पनी, 1965, पृ. 78
5. वही, पृ. 105
6. हबीब, मोहम्मद, एण्ड निजामी, के.ए., दिल्ली सल्तनत, भारती अनुसंधान परिषद, 1950, पृ. 85
7. श्रीवास्तव, ए.एल., भारत का इतिहास, आगरा, 1965, पृ. 201
8. चन्द्र सतीश, मध्यकालीन भारत, नई दिल्ली, 2003, पृ. 161
9. वही, पृ. 62
10. मोहम्मद हबीब एण्ड निजामी, के.ए., वही, पृ. 102
11. वही, पृ. 104